चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	23-11-26	5	1-3

युवाओं ने सीखी मशरूम उत्पादन तकनीक

एचएयू के सायना नेहवाल संस्थान में दिया प्रशिक्षण, स्वरोजगार की भी दी जानकारी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान की ओर से हरियाणा और उत्तर प्रदेश के युवाओं को मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें बटन, ऑयस्टर (ढींगरी), दूधिया, पैडी स्ट्रॉ, कीड़ा-जड़ी, गैनोडर्मा, शिटाके, लायंस मेन और किंग ऑयस्टर मशरूम की उत्पादन तकनीक सिखाई गई।

संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन कम पूंजी में शुरू होने वाला व्यवसाय है, जिसे भूमिहीन युवा भी अपना सकते हैं। इससे कृषि अवशेषों का सदुपयोग और पर्यावरण संरक्षण होता है।



कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी और अधिकारी। स्रोत : एचएयू

प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि प्रतिभागियों को मशरूम के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, विपणन और व्यवसाय शुरू करने के तरीकों के साथ सरकारी योजनाओं व अनुदान की जानकारी भी दी गई। इस दौरान डॉ. राकेश चुघ, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. विकास रहे। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	23.11.24	9	4-8

हकृवि में युवाओं को सिखाई मशरूम उत्पादन की तकनीक

कम पूंजी से शुरू हो सकता है मशरूम उत्पादन : गोदा

हरियाणा और उत्तर प्रदेश के प्रतिभागियों ने लिया प्रशिक्षण, कम पूंजी में स्वरोजगार शुरू करने के बताए तरीके

हरिभूमि न्यूज ›› हिसार



हिसार। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी एवं अधिकारी।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान की ओर से हरियाणा और उत्तर प्रदेश के युवाओं को मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन से लेकर उसके प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन तक की जानकारी देकर इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन का व्यवसाय बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है। भूमिहीन युवा भी इसे रोजगार के साधन के रूप में अपना सकते हैं। इस व्यवसाय से कृषि अवशेषों का सदुपयोग होता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ पौष्टिक आहार और खाद्य सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि प्रतिभागियों को बटन, ऑयस्टर (ढींगरी), दूधिया, पैडी स्ट्रॉ, कीड़ा-जड़ी, गैनोडर्मा, शिटाके, लायन्स मेन और किंग ऑयस्टर विभिन्न प्रकार की मश उत्पादन तकनीकों से करवाया गया। इसके मशरूम के प्रसंस्करण संवर्धन, पैकेजिंग, व्यवसाय शुरू करने की तथा विभिन्न सरकारी यो और अनुदानों की जानक गई। प्रशिक्षण के दौरान डॉ कुमार चुघ, डॉ. संदीप भ जगदीप सिंह, डॉ. विक डॉ. सरोज यादव और शर्मा ने भी मशरूम उत विभिन्न तकनीकों के विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	23-11-26	5	3-4

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण संपन्न

हरियाणा और उत्तर प्रदेश के युवाओं ने सीखा मशरूम उत्पादन का हुनर



कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी एवं अधिकारी।

हिसार, 22 नवम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनेक युवाओं को मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन को बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है। इसके साथ-साथ भूमिहीन युवा भी इसे एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं। इस व्यवसाय से कृषि अवशेषों का सदुपयोग होता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में मदद के साथ-साथ पौष्टिक आहार व खाद्य सुरक्षा भी मिलती है। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार की मशरूम जैसे बटन, ऑयस्टर (ढींगरी), दूधिया, पैडी स्ट्रॉ, कीड़ा-जड़ी, गैनोडर्मा, शिटाके, लायन्स मेन और किंग ऑयस्टर मशरूम आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त मशरूम के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, विपणन, व्यवसाय शुरू करने तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं और अनुदानों के बारे में भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. विकाश हुड्डा, डॉ. सरोज यादव तथा डॉ. डी.के. शर्मा ने भी मशरूम उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	23-11-26	4	7-8

हकृवि में हरियाणा-उप्र के युवाओं ने सीखा मशरूम उत्पादन



कार्यक्रम के दौरान उपस्थित प्रतिभागी एवं अधिकारी। • विज्ञप्ति

जासं • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान की ओर से हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनेक युवाओं को मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। संस्थान के प्रशिक्षण सह-निदेशक डा. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन को बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है। इसके साथ-साथ भूमिहीन युवा भी इसे एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	23-11-26	7	7-8

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण संपन्न

हिसार, 22 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनेक युवाओं को मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन को बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है। इसके साथ-साथ भूमिहीन युवा भी इसे एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं। इस व्यवसाय से कृषि अवशेषों का सदुपयोग होता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में मदद के साथ-साथ पौष्टिक आहार व खाद्य सुरक्षा भी मिलती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	23.11.2026	--	--

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण संपन्न



-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 23 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा हरियाणा और उत्तर प्रदेश के अनेक युवाओं को मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। यह जानकारी देते हुए संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि मशरूम उत्पादन को बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है। इसके साथ-साथ भूमिहीन युवा भी इसे एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते हैं। इस व्यवसाय से कृषि अवशेषों का सदुपयोग होता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में मदद के साथ-साथ पौष्टिक आहार व खाद्य सुरक्षा भी मिलती है। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार की मशरूम जैसे बटन, ऑयस्टर (ढींगरी), दूधिया, पैडी स्ट्रॉ, कीड़ा-जड़ी, गैनोडर्मा, शिटाके, लायन्स मेन और किंग ऑयस्टर मशरूम आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त मशरूम के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, विपणन, व्यवसाय शुरू करने तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं और अनुदानों के बारे में भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. विकाश हुड्डा, डॉ. सरोज यादव तथा डॉ. डी.के. शर्मा ने भी मशरूम उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी।